पुस्तकालय का उपहार
कैथरीन विंडहैम, चित्र : फ्रैंक हार्डी
पुस्तकालय का उपहार

अलबामा की ऐतिहासिक सेवा पब्लिक लाइब्रेरी के शताब्दी के अवसर पर, कथाकार केथरीन, अर्नेस्ट डॉसन की सच्ची कहानी बताती हैं।

जब वो 1930 के दशक में एक छोटे लड़के थे, तब रंगभेद और अलगाव कानूनों के कारण डॉसन, सेवा पुस्तकालय का उपयोग नहीं कर सके थे। लेकिन किताबों के प्रति उनका प्रेम और सीखने की उनकी उत्सुकता बेहद प्रबल थी, और अंत में वे एक शिक्षक बन गए।

वर्षों बाद, उन्होंने सेवा पुब्लिक लाइब्रेरी को बच्चों की पुस्तकों का उपहार दिया ताकि सभी नस्लों, जातियों के अन्य उत्सुक युवा पाठक - हमेशा किताबों का जादू खोजने के लिए सेवा पुस्तकालय में आते रहे।
चलो, अनेस्ट! हम सेल्मा जा रहे हैं। नीलांगों अनेस्ट डॉनसन को, उसके लिए किसी आपराध की ज़रूरत नहीं थी। वो शहर जाने को बेहद आतुर था। वो भागकर वैगन के पास गया और पीढ़े से उसमें बूढ़ गया।

उसकी माँ, पाली-में, अपने पति, जेक के बगल में स्थित सीट पर बैठी थी। अनेस्ट अपने पापा के खच्चर की लगाम खींचने और चाबुक की आवाज लगाने का इंतजार कर रहा था। जब पापा ने जोर से “गिरोड़-अप!” कहा तो वो संकेत था कि खच्चर ने वैगन को याद से बाहर खींच लिया था और अब वो धूल भरी सड़क पर सेल्मा की ओर बढ़ रहा था। यह सब शहर जाने की रस्म का एक हिस्सा था। अनेस्ट को रस्म पसंद थी।
"सावधान रहना, अर्ण्श, गिरना मत। देखो, सड़क बड़ी उबड़-खाबड़ है," उसकी माँ ने चेतावनी दी। जो चेतावनी भी उस रम का हिस्सा ही थी।

जैसे ही उन्होंने गति पकड़ी, एक वैद्य का पकड़ा जोर से उची म्हण लगा। "पर से निकलने से पहले मुझे उस पहिये में तेल डालना चाहिए था," पापा ने कहा। "काश आपने तेल डाला होता," माँ ने उत्सर्ग दिया। "तो शोर मुझे कफी परेशान करता है।"

पर अर्ण्श को पहिये के घरमारने की आवाज पसंद थी। उसे ऐसा लगता था जैसे कि पहिया गई हो। "सेवा जा रहे हैं। सेवा जा रहे हैं।" अर्ण्श ने कफी याद करने की कोशिश की जब तो पहली बार शहर गया था, लेकिन अब उसे यहां नहीं आया। "तब में बहुत छोटा रहा होंगा।" उसने फैसला किया, और तब उसने के शहर पूरे रात रहे भर अपने माँ के हाथ को पकड़कर रखा होगा।

उसे याद आया जब वो दादी द्वारा बनाई गई राजी पर पर गाड़ी में अपना सर रखता था। उस समय वो गाड़ी के बाहर देखने के लिए बहुत छोटा था। लेकिन अब, वो अपने नंगे पैरों से सड़क को छूते हुए पीछे बैठकर सवारी करते हुए, सबसे सुंदर देख सकता था - देवदार के चने अंगल, कपास के खेत, मजूरों के चारों की कतार, खाड़ी, चर्च, चरागाहों में चलने वाले मेवेशी आदि। अगले वर्ष, 1932 में, वो दस साल का होगा और तब वो बैगना चला सकेगा। उसने अपने बिस्तर के बाग की दीवार दर तारिख हिस्सा थी, और पापा ने बात याद दिखाई थी कि तब वो उसे खिच कर लगाने देंगे।

वो अब इतना बड़ा हो चुका था कि वो अकेले शहर में घूम सकता था, उसे हर समय अपने माँ या पापा के साथ रहने की ज़रूरत नहीं थी।
घड़ी की कभी बंद मत होने देना. समय बहुत महत्वपूर्ण है.
कभी भी देर मत करना.” इसलिए अर्नेस्ट ने कभी देर नहीं की,
अपने पूरे जीवन में कभी भी नहीं।

वो अच्छी तरह से पढ़ सकता था. उसे किताबें पसंद थी. उसे उन
जगहों के बारे में पढ़ना पसंद था जहाँ वो कभी गया नहीं था. उसे
इतिहास को आकर देने वाले महत्वपूर्ण लोगों के बारे में भी पढ़ना
pसंद था. हर रात वो अपनी बाइक बढ़ाता था. उसने खुद से बढ़ा
kिया था कि बड़ा होकर वो उससे लेकर रहस्योद्घाटन तक
सभी विषयों के बारे में पढ़ा।

वो इंडियस (स्थानीय जनजातियों) के बारे में किताबें
pढ़ा बाहरता था. अपने पिता के रहते पीछे-पीछे चलते
समय वो इंडियस के तीरों के सिरों को अपनी जेबों में
भरता रहता था. वो उन लोगों के बारे में सोचता था
जिन्होंने उन तीरों को आकर दिया होगा और विन
रोगों ने, प्राचीन काल में मिट्टी के बर्तनों को
बनाया होगा।

"जब मैं बड़ा हो जाऊंगा,” अर्नेस्ट कहा करता था, "तब मैं अपने
घर में किताबों से भरा एक कमरा बनाऊंगा, जिसमें फर्श से छात तक
kिताबों की कतारे होंगी."
अर्नेस्ट सीढ़ियों से ऊपर बढ़ा और फिर उसने भारी दरवाजे को धक्का देकर खोला। उसने जिस कमरे में प्रवेश किया वैसे ही हां। उसने पहले कभी नहीं देखा था। एक पक के लिए वो समय रह गया, और आधर्म्य से इधर-उधर देखने लगा।

तभी एक लम्बे काउंटर के पीछे से एक महिला ने कठोर स्वर में पूछा: “तुम क्या चाहते हो, तुड़के?” उसने महिला ने चस्मे के ऊपर से उसे देखा।

“मैं उनमें से कुछ किताबें पढ़ना चाहता हूँ, मैडम,” अर्नेस्ट ने उत्तर दिया।

महिला ने और घूरे से देखा। उसकी आवाज में अवमानना की एक तीखी धार थी, क्योंकि उसने कहा, “इस पुस्तकालय की किताबें सिर्फ गोरे लोगों के लिए हैं। हम कले लोगों को उन्हें पढ़ने नहीं देते हैं। कुछ तुम यहाँ से चले जाो।”

अर्नेस्ट तुरंत मुड़ा और दरवाजे से बाहर निकला। वो नहीं चाहता था कि वो महिला उसे रोते हुए देखे।

उसका दिन बराद हो गया था। वो धीर-धीर आगे बढ़ा। उसने कुछ भी देखने के लिए अपना सिर ऊपर नहीं उठाया। वो वापस येलो-फ्रैंट स्टोर की ओर चल दिया। वो दोपहर से बहुत पहले ही बेंच के एक कोने में आकर बैठ गया। उसने काफी कोशिश की, लेकिन वो वहाँ बैठे लोगों की बातचीत पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाया। उसके पास ने जो हॉट-डोंग खरीदा वो भी उसे बेस्बाद लगा। उसके चाचा ने उसे एक केंद्री दी थी जो अभी भी उसने नहीं खाई थी।

बाद में उसके चचेरे भाई ने उसके साथ अपना कर्टफाइ साझा लेकिन वो भी उसे कुछ अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा कि क्या उन चचेरे भाईयों के कभी पुस्तकालय जाने की कोशिश की थी, लेकिन उसने यह बात उनसे नहीं पूछी।

अर्नेस्ट घर जाना चाहता था। वो खुश हुआ जब चर्च की फाड़ में चार बजे। पापा को बेंच से उठकर अपने दोस्तों को बिदाई कहते हुए देखकर उसे खुशी हुई।

“घर जाना का समय हो गया है,” पापा ने कहा। “मुझे और अर्नेस्ट को अभी कुछ काम करने है, और हमें कल चर्च जाने के लिए तैयार भी होना है। कल संगीतकारों की प्रसंसा का दिन है। आप सभी ज्यादा आए। वहां खाने के लिए बहुत कुछ होगा। पहली में नारियल का केक लाएगी। अगर अर्नेस्ट ने चर्च पहुँचने से पहले उसे खाना नहीं किया।”

वे लोग हंसे। अर्नेस्ट ने अपने पिताजी के कोमल चिह्नों पर मुक्तागार की कोशिश की। उसने माता-पिता की खरीदारी को कैसे में भरने में मदद की, कुंड से खरीद के लिए पापी लाया, और फिर कैसे चढ़ गया।

कैसे का पहिया अभी भी चमर रहा था, लेकिन अब उसने अर्नेस्ट के लिए कोई खुशी गीत नहीं गाया। अब उसे धरातल में आवाज़ ऐसी लग रही थी, “कालों के लिए कोई किताब नहीं! कालों के लिए कोई किताब नहीं। कालों के लिए कोई किताब नहीं।”
बे घर पहुँचने वाले थे जब उसके पापा उसकी ओर मुड़े और उन्होंने पूछा, "क्या बात है बेटा?"

अन्नेस ने पूरी बदसूरत काहसी उन्हें एक सांस में सुनाई. "क्यों, पापा? क्यों?" वो चिलाया. "मेरे यह पृथक्तालय में जाकर कितने क्यों नहीं पढ़ सकता? यह बात उत्तेजित नहीं है!"

उसके पापा ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया. अन्नेस ने सोचा कि शायद उन्होंने उसका प्रश्न ही नहीं सुना. फिर, एक ऐसे स्वर में जिसे उसने पहले कभी नहीं सुना था पापा ने धीरे से कहा, "हां, बेटा, यह बिन्दुःकुल उत्तेजित नहीं है. यह सही नहीं है. लेकिन वो नई सी ही है, जैसी वो हैं. हो सकता है कि किसी दिन हालात बदल जाए. हो सकता है. अगर ऐसा होगा तो फिर वो एक चमकार होगा."

उसकी माँ ने कुछ भी नहीं कहा, लेकिन अन्नेस को ऐसा लगा जैसे वो रो ही नहीं.

उसके बाद उन तीनों ने फिर कभी फिर से पृथक्तालय का उल्लेख नहीं किया.

अन्नेस ने उन कठोर तिरिस्कार के शब्दों को भूलने की कोशिश की, जिससे उन्हें चोट लगी थी. इसभीति थेरेटर्स वर्ष में गना बनानेवालों के ग्राहकों दिवस पर जाने से उसे मदद मिली. जब उसने तीनों को अपनी माँ के नारायण केक की प्रशंसा करने चुना तो उसे गर्व हुआ, और वो तब मुकुटता जब पापा के एक मित्र ने उसे पूछा कि न खाने के लिए धन्यवाद दिया. अन्नेस पूरे जीवन भर अपने माता-पिता के साथ चर्चा गया था, वो अक्सर अपने चाचा द्वारा ब्राह्मण उपदेश के रूप में सुनाया जाता था, लेकिन वो प्राथमिक सेवा के दीर्घ चर्चा बैठा रहता था. कुछ रहस्यों को प्रारंभिक के समय वो दीनवरों में तख्तों की गिनती, और कुछ दीनवरों को वो बलिदान की गिनती थी. गर्मियों के रविवार वाले दिन वो खुली खिड़कियों से बाहर कथन के खेतों की देखता था जिनसे चर्चा लगभग चिरा हुआ था.

कुछ कहीं और तैयार अक्सर खुली खिड़कियों में से अंदर उड़ते थे और उपासकों के फर्स के चारों और मंदिर में. अन्नेस हसना बहाता था जब महिलाएँ अपनी पॉकेटबुक और पंखें से उड़ने वाले कोडियों की मारने की कोशिश करती थीं, लेकिन तब पापा अन्नेस को देखकर गुस्सा करते थे.

एक रविवार की उपदेशक की अपने धर्मक्षेत्र की ठीक बीच में रुकना पड़ा. जब तीनों का एक बुद्ध मंत्र पर मंदिर लगा. फिर बोर्ड के कुछ सदस्यों ने बचाव किया और पुस्पण्डितों को बचाया. अन्नेस की एक मौसी ने कहा कि शेतान ने ही उन तीनों को भूता होगा. अन्नेस यह बारे में निखिल नहीं था, और वो वापस से थोड़ा पुराना बूढ़ा गया.

कभी-कभी उपदेशक चमकाओं के बारे में बात करता था. अन्नेस ने लाल समस्या के दो हिस्सों में अलग होने की, और दिनों की मदद में इंजीनियरों की दीवार देखने की कल्तन दी. उसे योग के चमकाओं के बारे में भी सुनना अच्छा लगता था. उसकी सबसे मनमोहक कहानी थी जिसमें योगु ने एक छोटे लड़के के दोपहर के भोजन से एक बड़ी भीड़ की भोजन खिलाया था.

अन्नेस ने कभी भी चर्च में अपनी रचना नहीं खोई. जब वो किशोरवास में पहुँचा, तो उसने भजन मण्डल में गाया और संदेह सक्त की कक्षा को पहुंचाया.

उसके एक रिश्तेदार ने कहा, "अन्नेस ने जो कुछ भी किया, वो हमेशा सबसे सामने रहा. वो कभी भी गाय की फुट नहीं बना."

नेतृत्व की ओर समझता उसके जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई दी. जब वो सेवा की नॉक्स अकादेमी में पढ़ने गया तो वो वहां एक शीर्ष विद्यार्थी और 1943 के स्वातंत्र्य वर्ष का अध्यक्ष था.
नॉक्स अकादमी में एक खराब पुस्तकालय था, लेकिन वहां कुछ ऐसी किताबें भी थीं जो अर्नेस्ट ने पहले नहीं पढी थीं। वो अभी भी सेल्मा की कार्यकालीन लाइब्रेरी के अंदर नहीं जा सकता था। वो अभी भी सोचता था कि आसिफ ऐसा क्यों?

स्नानकी पढाई के बाद, अर्नेस्ट ने एक प्रोजेक्शनिस्ट के रूप में काम किया और नॉर्थ ब्रोड स्ट्रीट पर स्थित एक कंपनी फिल्म हाउस रॉकी निफ्टर का प्रबिंध किया। 1943 की गर्मियों के अंत में उसने अमेरिकी नौसेना में प्रवेश किया।

जैसा कि उनकी उम्र के हजारों युवाओं के लिए सच था, द्वितीय महायुद्ध की सैन्य सेवा ने, अर्नेस्ट के जीवन का बदल दिया। उसकी दुनिया अब टाइम और सेल्मा तक ही सीमित नहीं थी। वे उन जगहों पर थे जिनके बारे में उसने केवल पढ़ा था, और 1946 में अपने सम्मानजनक छूट के बाद, उसने यूनाईटेड स्टेट्स के सेवा किए और शैक्षिक अवसरों का लाभ उठाया।

सबसे पहले, उसने शिकागो में अमेरिकी टेलीविजन संस्थान से स्नातक किया। फिर वो न्यूयॉर्क चला गया, जहां उसने फुल-टाइम काम करते हुए, सिटी कॉलेज में रात की कक्षाओं में पढ़ाई की, बी.ए. गणित में डिग्री हासिल की। उसने बैप्टिस्ट चर्च में एक डेकन के रूप में सेवा दी, जिसे उसके एक चाचा ने हार्टम में स्थापित किया था। और साथ में उसने अन्य पुस्तकालयों का भी दौरा किया।
अनेस्ट ने पढ़ाने की कोशिश भी की, लेकिन वो तब निराश हुआ जब उसकी कक्षाओं में किशोरों ने सीखने में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई. उसके छात्रों ने उनके लिए सुक्ले अच्छे पुस्तकालयों का लाभ नहीं उठाया, और जब अनेस्ट ने उन्हें सेल्फ की कार्यक्रम लाईवेरी में अपनी अभ्यस्तता के बारे में बताया तो वे अविश्वास से उसकी ओर देखे लगे.

फिर कुछ दोस्तों ने सुझाव दिया कि वो छोटे बच्चों का मनोरंजन करने और उन्हें निर्देश देने की अपनी स्वाभाविक क्षमता, छोटी को कहानियाँ बताने और सुनाने और बचपन की मिश्रण में एक नया करियर शुरू करे. इसलिए अनेस्ट ने उस क्षेत्र में अध्ययन के लिए सिटी कॉलेज में फिर से दाखिला लिया.

अनेस्ट ने बच्चों, सभी जातियों और नस्लों के बच्चों के प्रति किया और उन्हें उसका प्यार सहर्ष लोटाया. सहायता के लिए यह बच्चों के समूह के आदर से जागरूक उसका पीछा करते थे, और उसके लिए बच्चों के प्रति अपनी देखभाल बढ़ायी थी और उनके बातों सुनने और हंसने थे. अनेस्ट अपने तीन चार और पांच साल के छोटे बच्चों को पुस्तकालयों में ले जाता था. वहाँ बच्चे किताबों उठा सकते थे, उनके पैरे पलट सकते थे और उनके सुन्दर चित्रों को देख सकते थे.

"बच्चों की किताबों की जरूरत होती है," अनेस्ट कहा करते थे.

सहायता के मद्देनजर अनेस्ट की रूचि और यात्रा के मद्देनजर उनका उस साथ दोनों एक साथ कागज रहे. उन्होंने न केवल अमेरिका के सभी बच्चों राज्यों का दौरा किया पर साथ में उन्होंने उसी देशों की भी यात्रा की. वो जहाँ भी उन्होंने दोस्त बनाए, अनेस्ट हमेशा परिवार के सदस्यों और दोस्तों की विदेशों से कार्ड भेजते थे और अपने विद्यार्थियों के लिए तस्वीरें और किताबें, यहाँ तक कि विदेशी भाषाओं में भी, इकट्ठा करते थे.
हालांकि उन्होंने दुनिया भर में यात्रा की, अर्नेस्ट यह कभी नहीं भूले कि वो कहां से आए थे, वो टायपर समुदाय और सेल्मा को कभी नहीं भूलते. वो बार-बार बार जाते थे. वो अपने माता-पिता को न्यूयॉर्क ले आए थे ताकि वो (उनकी एकमात्र संतान) उनकी देखभाल कर सके. वो माता-पिता की मृतु के बाद उनके शरीर को इसाबेला बैप्टिस्ट चर्च के कब्रिस्तान में दफनाने के लिए टायपर वापस आए.

एक यात्रा के दौरान उन्होंने अपने न्यूयॉर्क के एक दोस्त, डॉ. नॉर्मल पॉल के साथ सेल्मा में एक सुबह बिताई. उन्होंने शहर की विभिन्न वस्तुकालियों को निहारा और शहर की सड़कों पर टहले. तभी उनका मार्ग उन्हें सार्वजनिक पुस्तकालय तक ले गया.

डॉ. पॉल ने रिप्पली की, "मुझे लगता है कि जब आप बड़े हो रहे होगे तब आपने यहां बहुत समय बिताया होगा.

"नहीं," अर्नेस्ट ने उत्तर दिया. "नहीं. आप भूल रहे हैं कि मैं एक रंगभेदी और अलगवाली दलित में जा बढ़ा था. मुझे उस पुस्तकालय में जाने की अनुमति नहीं थी.

डॉ. पॉल चुप रहे. फिर उन्होंने चुटकी ली. "ठीक है, अब उसके अंदर चलते हैं," उन्होंने कहा.

और उन्होंने वहीं किया.

पुस्तकालय के कर्मचारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, उन्हें इमारत के चारों ओर दिखाया और नई सुविधायों में बच्चों के लिए नया विंग को जोड़ने की योजना के बारे में बताया.

अर्नेस्ट ने उनकी बातें धारा से सुनी.

चिल्ड्रेन्स विंग का निर्माण शुरू होने से पहले कई महीने योजना और धर्म जुटाने में लग गए. कभी-कभी परियोजना को संभालने वाली समिति निराश हो जाती थी और लगभग हर मान लेती थी, लेकिन जब उनकी आत्मा बढ़ती थी और उदासी छा जाती थी तब हमेशा कोई एक छोटा सा समकाल होता था.

एक दिन कई बीस करोड़ गोली हो गई थीं, और लोग बहुत अधिक उदास थे. फिर यह बाबु आई कि एक संभवित दाता, एक व्यक्ति जिसे विदेश समिति ने एक बड़ा उपहार देने के लिए चुना था, ने परियोजना का समर्थन नहीं करने का फैसला किया था.

समिति के एक सदस्य ने करार दिया हुआ कहा, "हो सकता है कि अब बच्चों की विंग का निर्माण ही नहीं करना चाहिए. ये संकेत है कि हमें उस कार्य को छोड़ दें चाहिए.

तभी एक मानसिक रूप से विकल्प बचा, जो पुस्तकालय में आने का आनंद लेता था, अपनी मां के साथ आया. वो केवल हैट डेस्क पर गया और वहाँ पर उसने अपना गुलाक खाली कर दिया. जैसे ही काउंटर पर सिक्के बेचे उसने अपने सरत से बाहर. "मैं अपना भविष्य का पुस्तकालय बनाने के लिए लाया हूँ.

उसके बाद उस्योजन में लोगों का विस्मय फिर कभी नहीं ढगमगाया.

हालांकि, जैसे-जैसे इमारत का ढाँचा पूरा होने लगा था, लाइब्रेरियन किताबों के साथ नई अलमारियों को स्टॉक करने के लिए धर्म खोजने के बारे में चिंतित थे.

"आगर हम बच्चों के लिए किताबें नहीं खरीद सकते तो फिर इस अद्भूत नई इमारत का क्या महत्व? उसके लिए पैसा कहां से आएगा?" उन्होंने आश्चर्यविलिक क्रूर होकर पूछा.

अब एक अन्य चमकार का समय था.
फिर पत्र आया, न्युयॉर्क पोस्टमार्क वाला पत्र. पत्र में लिखा था, "मैं, अर्नेस्ट एल. डॉम्सन की संपत्ति के निष्पादक के रूप में यह घोषणा करने के लिए लिख रहा हूँ कि मिस्टर डॉम्सन ने सेल्वा पब्लिक लाइब्रेरी को, अपने लाभार्थियों के रूप में चुना है. अर्नेस्ट के परिवार के समान में 10,000 डॉलर का दान देने के लिए आपके पुस्तकालय में आकर मुझे बहुत खुशी होगी.

कभी-कभी सभी जातियों और नस्लों के बच्चों, सेल्वा लाइब्रेरी के रीडिंग रूम में, एक कोमल मुखन और हाँसती आँखों के आदमी की तस्वीर को दीवार पर देखने के लिए रुकते हैं. अधिकांश बच्चे चित्र ने सीधे दिखाया था पर अर्नेस्ट टी. डॉम्सन को पढ़ने के लिए बहुत छोटे होते हैं, और यह समझने के लिए भी बहुत छोटे होते हैं कि डॉम्सन, क्षमा और प्रेम के चमकार से ओत-प्रोत थे.